पद ६६

(राग: जोगिया - ताल: धुमाळी) कोठवर धीर धरूं काय करूं हे रामा। स्फुंदु स्फुंदु आळवीतें। आठवुनी तव नामा। चिन्मार्तांड वंश जानकीनिधि सुखचंद्रा। संकटी सोडवी अबला ने तुझ्या निज धामा।।१।।